ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27   अंकः 75   बुलेटिन अवधिः 21–25 सितम्बर, 2018   दिनः बृहस्पतिवार   दिनाँकः 20 सितम्बर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल**				
	21/09/2018	**22/09/2018**	**23/09/2018**	**24/09/2018**	**25/09/2018**
वर्षा (मिमी0)	1	15	25	25	25
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	23	22	23
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	14	13	12	13
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	85	90	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	45	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	010	008	008	006
वायु की दिशा	पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

21 सितम्बर को बूंदा–बांदी तथा 22 से 25 सितम्बर को मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (13 – 19 सितम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 20.0 से 26.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 11.8 से 14.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- धान में भूरा पर्णधब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब का 2.5 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा पानी रोकने की उचित व्यवस्था करे।
- मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नत्रजन की आधी बची मात्रा का यूरिया के रुप में टाप ड्रेसिंग दो बार में कल्ला फूटते समय रोपाई के 20 दिन बाद तथा बाली बनने की प्रारम्भिक अवस्था यानि रोपाई के 40–50 दिन पर प्रयोग करें। नाइट्रोजन के टॉप ड्रेसिंग के समय खेत मे पर्याप्त नमी होना चाहिए तथा पत्तों पर वर्षा की बूंदे न हो।
- दलहनी एवं गन्ने की फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।

उद्यानप्रबन्धः

- मध्यम व ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में, मटर, मूली, बन्दगोभी, फूलगोभी फसलो में गुड़ाई के पश्चात् पलवार का प्रयोग करें ताकि नमी संरक्षण हो सके।
- घाटी क्षेत्रो में, घरेलू खपत के लिए सिंचित दशा में बन्दगोभी एवं फूलगोभी स्नोबॉल समूह का प्रतिरोपण करें।
- घाटी क्षेत्रो में, यदि बरसात समाप्ति पर है तथा खेत में पानी नही रुकता हो तो प्रथम सप्ताह में अर्किल मटर की बुवाई करें।
- टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- फ्रासबीन की फलिया सड़ने एवं सफेद फफूंदी की बढ़वार दिखाई पड़ने पर कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- शीतोष्ण फलों में, तनों तथा टैहनियों पर लाइकेन की पपड़ी को हटाने के लिए 1 प्रतिशत कास्टिक सोडा का छिड़काव करें।
- सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
- बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।

पशुपालनप्रबन्धः

- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्यामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- इस मौसम में भेड़ो को एनटैरोटाक्सीमिया रोग लग जाता है जिसके कारण उनके आतों में सूजन आ जाती है। भेड़ों को इस रोग से बचाने हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से टीका लगवाएं।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूंदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- नमी की वजह से आहार में फफूंदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।
- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से यूटरोटोन/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।

❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

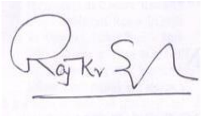

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर